Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies,
Online ISSN 2278-8808, SJIF 2018 = 6.371, www.srjis.com
PEER REVIEWED JOURNAL, NOV-DEC, 2018, VOL- 6/48

उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के आत्म–प्रत्यय का लिंग भेद के आधार पर तुलनात्मक अध्ययन

प्रोफे0 पी0 एस0 त्यागी[1], कृष्णा त्यागी[2] एवं रमेश[3]
[1]शिक्षा संकाय डी0ई0आई0 (डीम्ड वि0 वि0) दयालबाग आगरा
[2]शिक्षा संकाय डी0ई0आई0
[3]शोध छात्र

Abstract

शिक्षा के क्षेत्र में आत्म–प्रत्यय का महत्वपूर्ण स्थान है। आत्म–प्रत्यय स्वयं का एक मूल्यांकन करने वाला घटक है या यह कहें तो गलत नहीं होगा कि आत्म–प्रत्यय स्वयं के बारे में जानना, कि हम क्या है? कौन है? और हम दूसरों से किस प्रकार भिन्न है? इसमें उच्च माध्यमिक स्तर के छात्र और छात्राओं के आत्म–प्रत्यय पर लिंग भेद या विषय वर्ग के प्रभाव का अध्ययन किया गया है और शून्य परिकल्पना की मद्द से आत्म–प्रत्यय पर लिंग भेद और विषय वर्ग के प्रभाव को देखा गया है। इसमें उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षा बोर्ड से सम्बद्ध उच्च माध्यमिक स्तर के सभी विद्यार्थियों को जनसंख्या के रूप में लिया गया है और न्यादर्श के रूप में बरेली जिले के 400 विद्यार्थियों को सामान्य यादृच्छिक विधि द्वारा चयनित किया गया है। साथ ही शोध विधि –वर्णात्मक सर्वेक्षण विधि, उपकरण – के0 एन0 शर्मा द्वारा 2009 में निर्मित आत्म–यथार्थीकरण परिसूची, और प्रदत्त विश्लेषण हेतु ***मध्यमान , प्रमाप विचलन और टी–टैस्ट*** *का प्रयोग किया गया है। प्रदत्तों विश्लेषण करने के पश्चात यह कहा जा सकता है कि आत्म–प्रत्यय पर लिंग भेद का कोई प्रभाव नहीं पड़ता। जबकि छात्र व छात्राओं के आत्म प्रत्यय पर विषय वर्ग (विज्ञान एवं कला वर्ग) का प्रभाव पड़ता है। अर्थात आत्म–प्रत्यय को पाठ्यक्रम व वातावरण के माध्यम से विकसित किया जा सकता है। क्योंकि शोध में पाया गया है कि विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों का आत्म–प्रत्यय कला वर्ग के विद्यार्थियों के आत्म–प्रत्यय से उच्च होता है। इसके माध्यम से हम कला वर्ग के पाठयक्रम को और अधिक तार्किक व वैज्ञानिक बनाने का सुझाव दे सकते है। अतः शोध का उपयोग शिक्षा के विभिन्न क्षेत्रों में किया जा सकता है।*

सूचक शब्द (key word)– *आत्म–प्रत्यय,एवं लिंग भेद*

Scholarly Research Journal's is licensed Based on a work at www.srjis.com

1.0 प्रस्तावना–

शिक्षा व्यक्ति को संस्कारशील बनाती है, वह उनके व्यवहार, आचरण, सोचने–समझने के दृष्टिकोण को सकारात्मक करने के साथ–साथ जीवन की चुनौतियों का सामना करने में सक्षम बनाती है। शिक्षा के क्षेत्र में आत्म–प्रत्यय का महत्वपूर्ण स्थान है। शिक्षा में आत्म–प्रत्यय का तात्पर्य है, कि विद्यार्थी अपने मूल मकसद को प्राप्त करता है या नहीं यह जानने के लिए आत्म–प्रत्यय का प्रयोग किया जाता है। शिक्षा के क्षेत्र में कोई विद्यार्थी किसी कार्य को करना चहाता है? कितना कर सकता है? और कैसे कर सकता है? यह सब उसके आत्म– प्रत्यय को दर्शाता है।

1.1 आत्म प्रत्यय–

सारस्वत(1984) आत्म–प्रत्यय में 'आत्म'– स्वंय के प्रति रखने वाली अनुभूतियों का समूह है। रोजर्स (1951) ने आत्म– प्रत्यय को स्वंय के प्रत्यक्षणों के एक संगठित स्वरूप में परिभाषित किया है। नैल(2005) ने भी माना कि आत्म–प्रत्यय स्वंय के बारे में प्राकृतिक एवं संगठित विश्वास है, यह बहुविमीय सिद्धान्त है। लोग अपने शारीरिक, संवेगात्मक एवं सामाजिक पक्षों के बारे में पृथक–पृथक विश्वास रखते है। दूसरे शब्दों में कहें तो आत्म–प्रत्यय स्वयं का एक मूल्यांकन करने वाला घटक है या यह कहें तो गलत नहीं होगा कि आत्म–प्रत्यय स्वयं के बारे में जानना, कि हम क्या है? कौन है? और हम दूसरों से किस प्रकार भिन्न है?

1.2 आत्म–प्रत्यय से जुड़ी अवधारणाएं एवं प्रकृति–

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

आत्म– प्रत्यय सीखा जाता है, यह जन्म जात नहीं होता। यह संगठित होता है।इसमें स्थिरता व संगतता होती है, और आत्म– प्रत्यय का संगठित गुण व्यक्तित्व को स्थिरता प्रदान करता है। आत्म– प्रत्यय गत्यात्मक होता है। इसका विकास एक सत्त प्रक्रिया के अर्न्तगत होता है। और व्यक्ति नये विचारों के साथ–साथ पुराने विचारों को निष्कासित करता रहता है। **कार्लरोजर्स ने आत्म–प्रत्यय के तीन घटक बताये है– 1.आत्म–प्रतिमा–** व्यक्ति के स्वयं के विषय में विचार । 2. **आत्म–सम्मान–** ये एक मूल्यांकनात्मक घटक है। जब कोई एक व्यक्ति के रूप में अपने मूल्य, मान और अपनी योग्यता के बारे में निर्णय या आकलन करता है, तब व्यक्ति के बारे में मूल्य निर्धारण ही आत्म–सम्मान कहलाता है। ये दो प्रकार का होता है– **उच्च आत्म–सम्मान–** अर्थात अपनी योग्यता में विश्वास, आत्म स्वीकृत /अनुमोदन, आशावादिता, और **निम्न आत्म–सम्मान–** विश्वास की कमी, किसी दूसरे जैसे दिखना, निराशावादिता 3. **आदर्श स्वः–** आद**र्श** स्वः से तात्पर्य यह है कि व्यक्ति क्या बनना चहाता है ? और क्या बनने की इच्छा रखता है? जैसे– आद**र्श**वादी, आकर्षक, दृढ़ संकल्पी, बुद्धिमान आदि।

1.3 आत्म–प्रत्यय को प्रभावित करने वाले कारक –

- दूसरों की प्रतिक्रिया
- दूसरों के साथ तुलना करना
- सामाजिक भूमिकाएं
- पहचान

1.4 आत्म–प्रत्यय का शैक्षिक महत्व–

1. आत्म–प्रत्यय स्वयं की योग्यताओं, कुशलताओं और दक्षताओं का स्वयं वर्णन है।
2. आत्म– प्रत्यय का समायोजन, बुद्धि, शैक्षिक बुद्धि, सुजनात्मकता अनुशासन व मानसिक योग्यताओं और मानसिक विकारों से गहरा सम्बन्ध है।
3. आत्म–प्रत्यय के सकारात्मक व नाकारात्मक होने से ही उपरोक्त में सकारात्मकता या नकारात्मकता आती है।
4. यह संतुलित व्यक्तित्व के लिए परम आवश्यक है।
5. अभिप्रेरित रहने के लिए आवश्यक है।
6. सांवेगिक स्थिरता के लिए परम आवश्यक है।
7. आत्म–प्रत्यय सही गलत के निर्णय के लिए भी आवश्यक है।
8. आदर्श नागरिक बनने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

आत्म–प्रत्यय से सम्बन्धित अध्ययनों में मित्तल 1997, कुशवाह 2009, तुलसी राम , शेखर सुभाष 2011, **मिलर–ग्रेटस जॉन(2003),एचमिदत एवं कागरान (2008), जेक्सन(2009), देशमुख एवं स्वालखी (2010**) ने बताया कि छात्र व छात्राओं के आत्म–प्रत्यय में अन्तर नहीं पाया जाता और इसका शैक्षिक उपलब्धि, संवेगात्मक बुद्धि और समायोजन के साथ सकारामक सहसम्बन्ध होता है।

2 समस्या कथन–

''उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के आत्म–प्रत्यय का लिंग भेद के आधार पर तुलनात्मक अध्ययन''

3.0. समस्या कथन में प्रयुक्त शब्दों का परिभाषीकरण–

3.1.उच्च माध्यमिक स्तर–

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

कक्षा 10 के बाद व स्नातक स्तर से पूर्व की कक्षा– 11 और 12 में पढने वाले विद्यार्थियों को उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थी कहा जाता है ।

3.2.आत्म–प्रत्यय–

हरलॉक(1978) ने आत्म–प्रत्यय को स्पष्ट करते हुए कहा है– ''आत्म–प्रत्यय वे प्रतिमायें हैं, जो व्यक्ति स्वयं अपने सम्बन्ध में रखता हैं। आत्म–प्रत्यय में व्यक्ति के वे विश्वास होते है जो कि व्यक्ति अपनी शारीरिक मनोवैज्ञानिक विशेषताओं के सम्बन्ध में रखता है।''

क्रियात्मक परिभाषा–

आत्म–प्रत्यय स्वयं का एक मूल्यांकन करने वाला घटक है या यह कहें तो गलत नहीं होगा कि आत्म–प्रत्यय स्वयं के बारे में जानना, कि हम क्या है? कैसे है? और क्या हमें दूसरों से भिन्न बनाता है? हमारे उद्देश्यों के लिए, आत्म–प्रत्यय को किसी की रचनात्मक, बौद्धिक या समाजिक क्षमता का पूर्ण अहसास माना जा सकता है।

3.3. लिंग–

संसार के प्रत्येक जीव को दो प्रकारों में बांटा है नर और मादा यह ही लिंग कहलाता है अर्थात स्त्री और पुरूष।

4.0 शोध समस्या के उद्देश्य–

4.1 उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के आत्म–प्रत्यय का अध्ययन करना।

4.2 उच्च माध्यमिक स्तर के छात्र व छात्राओं के आत्म–प्रत्यय का तुलनात्मक अध्ययन करना।

4.3. उच्च माध्यमिक स्तर के कला वर्ग और विज्ञान वर्ग के छात्रों के आत्म–प्रत्यय का तुलनात्मक अध्ययन करना।

4.4. उच्च माध्यमिक स्तर की कला वर्ग और विज्ञान वर्ग की छात्राओं के आत्म–प्रत्यय तुलनात्मक अध्ययन करना।

4.5. उच्च माध्यमिक स्तर के कला वर्ग और विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों के आत्म–प्रत्यय का तुलनात्मक अध्ययन करना।

5.0 शोध समस्या की परिकल्पनाएं–

5.1. उच्च माध्यमिक स्तर के छात्र व छात्राओं के आत्म–प्रत्यय कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

5.2. उच्च माध्यमिक स्तर के कला वर्ग और विज्ञान वर्ग के छात्रों के आत्म–प्रत्यय में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

5.3. उच्च माध्यमिक स्तर की कला वर्ग और विज्ञान वर्ग की छात्राओं के आत्म–प्रत्यय में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

5.4 उच्च माध्यमिक स्तर के कला वर्ग और विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों के आत्म–प्रत्यय में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

6.0 चर–

6.1. स्वतन्त्र चर– लिंग और कला व विज्ञान वर्ग।

6.2. आश्रित चर– आत्म–प्रत्यय।

7.0 जनसंख्या–प्रस्तुत शोध में उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षा बोर्ड से सम्बद्ध समस्त सरकारी व गैर–सरकारी विद्यालयों के उच्च माध्यमिक स्तर के सभी विद्यार्थियों को जनसंख्या के रूप में लिया गया है।

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

8.0. प्रतिदर्श–प्रस्तुत शोध में बरेली जिले के उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षा बोर्ड से सम्बद्ध समस्त सरकारी व गैर–सरकारी विद्यालयों के उच्च माध्यमिक स्तर के 400 विद्यार्थियों को सामान्य यादृच्छिक विधि द्वारा चयनित किया गया है।

9.0 शोध विधि– प्रस्तुत शोध में वर्णात्मक सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

10.0. प्रयुक्त उपकरण–प्रस्तुत शोध में शोधकर्ता द्वारा आत्म–प्रत्यय से सम्बन्धित के0 एन0 शर्मा द्वारा 2009 में निर्मित आत्म–यथार्थीकरण परिसूची का उपयोग किया गया है।

11.0 प्रयुक्त सांख्यिकी–प्रस्तुत शोध में प्रदत्त विश्लेषण हेतु म**ध्यमान , प्रमाप विचलन और टी–टैस्ट** का प्रयोग किया गया है।

12.0 आंकड़ों का विश्लेषण एवं व्याख्या–

परिकल्पना संख्या 5.1.

''उच्च माध्यमिक स्तर के छात्र व छात्राओं के आत्म–प्रत्यय कोई सार्थक अन्तर नहीं है।''

तालिका संख्या–12.1

समूह	N	M	SD	D	SED	t	सार्थकता
छात्र	200	166.1	16.5	2.6	1.59	1.63	सार्थक नहीं है
छात्राएं	200	164.7	15.47				

उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट है कि हमारी शून्य परिकल्पना **''उच्च माध्यमिक स्तर के छात्र व छात्राओं के आत्म–प्रत्यय कोई सार्थक अन्तर नहीं है।''** स्वीकार होती है क्यों कि **t का परिगणित मान 1.63** है जा कि **t** के सारणी मान 0.05 स्तर पर 1.97 और 0.01 स्तर पर 2.58 से कम है। जो कि दोनों ही स्तर 0.01 और 0.05 पर सार्थक नहीं है। इसलिए हम कह सकते है कि उच्च माध्यमिक स्तर के छात्र व छात्राओं के आत्म–प्रत्यय कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

परिकल्पना संख्य 5.2.

''उच्च माध्यमिक स्तर के कला वर्ग और विज्ञान वर्ग के छात्रों के आत्म–प्रत्यय में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।''

तालिका संख्या–12.2

समूह	N	M	SD	D	SED	t	सार्थकता
कला वर्ग	100	162.1	15.1	5.40	2.07	2.60	सार्थक है
विज्ञान वर्ग	100	167.5	14.5				

उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट है कि निर्मित शून्य परिकल्पना **''उच्च माध्यमिक स्तर के कला वर्ग और विज्ञान वर्ग के छात्रों के आत्म–प्रत्यय में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।''** अस्वीकृत होती है क्यों कि **t का परि**गणित मान 2.60 है। जो कि **t** के सारणी मान 0.05 स्तर पर 1.96 और 0.01 स्तर पर 2.58 से अधिक है। जो कि दोनों ही स्तर 0.01 और 0.05 पर सार्थक है। इसलिए हम कह सकते हैं कि उच्च माध्यमिक स्तर के कला वर्ग और विज्ञान वर्ग के छात्रों के आत्म–प्रत्यय में सार्थक अन्तर है।

परिकल्पना संख्या 5.3.

''उच्च माध्यमिक स्तर की कला वर्ग और विज्ञान वर्ग की छात्राओं के आत्म–प्रत्यय में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।''

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

तालिका संख्या–12.3

स्मूह	N	M	SD	D	SED	TCR	सार्थकता
कला वर्ग	100	162.6	16.4	6.1	2.26	2.69	सार्थक है।
विज्ञान वर्ग	100	168.7	15.57				

उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट है कि निर्मित शून्य परिकल्पना " उच्च माध्यमिक स्तर की कला वर्ग और विज्ञान वर्ग की छात्राओं के आत्म–प्रत्यय में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।" अस्वीकृत होती है क्यों कि **t का परिगणित** मान 2.69 है जो कि **t** के सारणी मान 0.05 स्तर पर 1.96 और 0.01 स्तर पर 2.58 से अधिक है। जो कि दोनों ही स्तर 0.01 और 0.05 पर सार्थक है। इसलिए हम कह सकते है कि उच्च माध्यमिक स्तर की कला वर्ग और विज्ञान वर्ग की छात्राओं के आत्म–प्रत्यय में सार्थक अन्तर है।

परिकल्पना संख्या 5.4.

"उच्च माध्यमिक स्तर के कला वर्ग और विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों के आत्म–प्रत्यय में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।"

तालिका संख्या–12.4

स्मूह	N	M	SD	D	SED	t	सार्थकता
कला वर्ग	200	162.1	15.47	5.6	1.65	3.39	सार्थक है।
विज्ञान वर्ग	200	167.7	17.51				

उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट है कि निर्मित शून्य परिकल्पना "उच्च माध्यमिक स्तर के कला वर्ग और विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों के आत्म–प्रत्यय में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।" अस्वीकृत होती है क्यों कि **t का** परिगणित मान **3.39 है जो t** के सारणी मान 0.05 स्तर पर 1.96 और 0.01 स्तर पर 2.58 से अधिक है। जो कि दोनों ही स्तर 0.01 और 0.05 पर सार्थक है। इसलिए हम कह सकते है कि उच्च माध्यमिक स्तर के कला वर्ग और विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों के आत्म–प्रत्यय में सार्थक अन्तर है।

शोध निष्कर्ष–

प्रस्तुत शोध में निर्मित एक शून्य परिकल्पना स्वीकृत हुई है और तीन **शून्य** परिकल्पनाएं अस्वीकृत हुई है। प्रथम परिकल्पना स्वीकृत हो जाती है जिसमें उच्च माध्यमिक स्तर के छात्र और छात्राओं के आत्म–प्रत्यय में कोई अन्तर नहीं पाया गया। द्वितीय परिककलपना अस्वीकृत हो जाती है जिसमें उच्च माध्यमिक स्तर के कला वर्ग और विज्ञान वर्ग के छात्रों के आत्म–प्रत्यय में सार्थक अन्तर पाया गया है। तृतीय परिकल्पना स्वीकृत हो जाती है जिसमें उच्च माध्यमिक स्तर की कला वर्ग और विज्ञान वर्ग की छात्राओं के आत्म–प्रत्यय में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया। चतुर्थ परिकल्पना अस्वीकृत हो जाती है जिसमें उच्च माध्यमिक स्तर के कला वर्ग और विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों के आत्म–प्रत्यय में सार्थक अन्तर पाया गया ।

उपर्युक्त परिकपनाओं का अध्ययन करने के पश्चात हम यह कह सकते है कि आत्म–प्रत्यय पर लिंग भेद का कोई प्रभाव नहीं पड़ता। जबकि छात्र व छात्राओं के आत्म प्रत्यय पर विषय वर्ग (विज्ञान एवं कला वर्ग) का प्रभाव पड़ता है। अर्थात यह कहा जा सकता है कि आत्म–प्रत्यय को पाठ्यक्रम व वातावरण के माध्यम से विकसित किया जा सकता है। क्योंकि शोध में पाया गया है कि विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों का आत्म–प्रत्यय कला वर्ग के विद्यार्थियों के आत्म–प्रत्यय से उच्च होता है।

शैक्षिक निहतार्थ– राष्ट्र व समाज को सही दिशा प्रदान करने व आगे बढ़ाने में युवा वर्ग की मूख्य भूमिका होती है। समाज के अंगों व पक्षों को विकास व प्रगति की दि**शा** मिले। समाज की प्रत्येक समस्या, स्थिति पर उसके युवा वर्ग के चिन्तन,विचारों और दृष्टिकोण का स्थान निश्चय ही महत्वपूर्ण है। अतः आत्म– प्रत्यय जैसे महत्वपूर्ण विषय के विविध पक्षों के प्रति आज के युवा वर्ग के दृष्टिकोण के

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

तुलनात्मक अध्ययन पर आधारित शोध का महत्व स्वंय सिद्ध है। इस शोध में आत्म–प्रत्यय से सम्बन्धित विभिन्न सैद्धान्तिक एवं व्यवहारिक जानकारी प्रदान की गयी है। इसमें युवाओं की स्वयं से सम्बन्धित समस्याओं के विविध पहलूओं को छूने का प्रयास किया गया है और साथ ही युवाओं के दृष्टिकोणों को जानने का प्रयास किया गया है। इसके माध्यम से हम कला वर्ग के पाठयक्रम को और अधिक ताक्रिक व वैज्ञानिक बनाने का सुझाव दे सकते है। अतः शोध का उपयोग शिक्षा के विभिन्न क्षेत्रों में किया जा सकता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची–

एचमिदत, एवं कागरान (2008), *सेल्फ–कॉन्सेप्ट ऑफ स्टूडेन्ट इन इनक्लूसिव सैटिंग्स, पीएच0डी थीसिस, मारिबर विश्वविद्यालय, सलोवेनिया।*

*कुशवाह **(2009),** जैंडर डिफरेंस इन दि सेल्फ कॉन्सेप्ट ऑफ स्टूडेन्ट्स, पीएच0डी थीसिस, कुरूक्षेत्र यूनीवर्सिटी हरियाणा।*

मीनाक्षी, अनन्द एण्ड नीरू, शर्मा(2011), *इमोशनल इंटेलीजेंन्स मिचयुरटी एण्ड सेल्फ एक्चुलाइजेशन अमंग यूथ. यु0 के0: एलएपी लैमबर्ट एकेडमिक पब्लिशिंग।*

मित्तल (1997), *सेल्फ–कॉन्सेप्ट एण्ड स्कूलिस्टक अचीबमेंट ऑफ द गर्लस ऑफ वक्रिगं मदरस एण्ड नॉन–वक्रिंग मदर, पब्लिशड पी एच0डी थीसिस, पंजाब यूनीवर्सिटी पंजाब।*

मारोंगपनित (2010), *दि स्टडी ऑफ ग्रोथ बिटबीन एकेडेमिक सेल्फ कॉन्सेप्ट,नॉन एकेडेमिक सेल्फ– कॉन्सेप्ट एण्ड एकेडेमिक एचीवमेन्ट ऑफ नाइन्थ ग्रेथ स्टूडेन्ट : ए मल्टीपल ग्रुप एनालसिस, पीएच0डी थीसिस, थाइलैण्ड।*

गार्डनर, आर0 सी0(2005), मोटिवेशन एण्ड ऐटीट्यूड इन सेकण्ड लैंग्युज लरनिंग इनसाइकलोपिडिया ऑफ लैंग्युज एण्ड लैंग्यंस्टिक(सेकण्ड ऐडीशन) ऑक्सफोर्ड , यूके।

गैरिट,एच0ई0(2005), स्टेटिसटिक्स इन साइकोलॉजी एण्ड एजुकेशन, न्यु दिल्ली, परगॉन इन्टरनेशनल पब्लिशर।